Page No.
Date.

DATE : / 20
PAGE No

Definations :-

(1) अलंकार :- स्वरों की नियबद्ध रचना या नियमित वर्ण समुदाय को अलंकार कहते हैं। अलंकार का अर्थ है आभूषण या गहना। जैसे प्रकार आभूषण शारीरिक शोभा बढ़ाते हैं। उसी प्रकार अलंकार द्वारा गायक की शोभा बढ़ाते हैं। अलंकारों को 'पल्टा' भी कहते हैं।
संगीत के नए विद्यार्थियों को सबसे पहले अलंकार सिखाए जाते हैं। जिससे स्वरज्ञान भलि भांति हो सके। अलंकारों के अभ्यास से कंठ मधुर हो जाता है। गीत की रचना करने में भी सहायता मिलती है। अतः हम ये भी कह सकते हैं। वर्णों को विशिष्ट क्रम को अलंकारों की संख्या अलग-2 मानी है। दातलम के अनुसार 13 प्रकार के अलंकार हैं। नान्यदेव ने इनकी संख्या 56 बताई है। शारंगदेव ने 63 बताई है।

(2) वर्ण :- गान की जो क्रिया है उसे वर्ण कहते हैं तथा स्वरों को यथाविधि के अनुसार गाने को वर्ण कहा जाता है।
वर्ण चार प्रकार के हैं :-

(i) स्थाई वर्ण :- जब एक ही स्वर बार-2 ठहरकर गाया जाए तो यह क्रिया स्थाई वर्ण कहलाती है।
जैसे :- सा सा सा रे रे रे ग ग ग।

(ii) आरोही वर्ण :- जब स्वर नीचे से ऊपर क्रमानुसार गाए जाते हैं तो उन्हें आरोही वर्ण कहते हैं।
जैसे :- सा रे ग म प ध नि सां।

(iii) अवरोही वर्ण :- जब स्वर ऊपर से नीचे क्रमानुसार गाए जाते हैं तो उन्हें अवरोही वर्ण कहते हैं। जैसे :- सां नि ध प म ग रे सा।

(iv) संचारी वर्ण :- स्थाई, आरोही व अवरोही तीनों वर्णों के मिश्रण से जो स्वर गाए जाते हैं। उन्हें संचारी वर्ण कहते हैं।

Scanned with CamScanner

PAGE No

(3) ख्याल :- ख्याल फारसी भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ है कल्पना। गीत के इस प्रकार में गायक विशेष महत्व दिए जाने के कारण शास्त्रकारो ने इस ख्याल की संज्ञा दी है। गीत का वह प्रकार जिसमे आलाप तान, खटका, कण आदि विभिन्न अलंकारो द्वारा किसी विशिष्ट राग के उसके नियमो का पालन करते हुए भावो को प्रकट करते है। तो इस शैली को ख्याल गायन शैली कहते है। ख्याल का आविष्कारक अमीर खुसरो को माना है।

(i) बड़ा ख्याल :- जब ख्याल विलंब से विलम्बित लय मे गाया जाता है तो उसे विलंबित ख्याल कहते है। इस ख्याल को गाने मे ज्यादा समय लगता है। ज्यादातर विलंबित ख्याल एक ताल मे गाए जाते है।

(ii) छोटा ख्याल :- यह द्रुत लय मे गाया जाता है। इसको गाने मे कम समय लगता है। द्रुत ख्याल की प्रकृति चंचल होती है। द्रुत ख्याल के लिए तीन ताल, एक ताल, झपताल आदि का प्रयोग किया जाता है।

(4) तराना :- तराना एक प्रकार की आधुनिक गायन शैली मे गीत का प्रकार है। इसका निर्माण निरर्थक वर्णो से होता है। यह द्रुत लय मे गाई जाने वाली गायन शैली है।

उत्पत्ति :- वैसे तो तराने के आविष्कारक के विषय मे कई मत है। परन्तु अमीर खुसरो को इसका आविष्कारक माना गया है।

तराना गायन शैली :- तराना गायन शैली निरर्थक शब्दो का प्रयोग जैसे - तन देरे ना ना दिर दिर देरेना आदि होता है। ख्याल गायकी तरह ही गाया जाता है। इसके दो भाग होते है स्थाई और अंतरा। कुछ गायक लयकारियो के साथ तानो का भी प्रयोग करने लगे है। प्राचीन काल मे तातरस खाँ, बहादुर खाँ तथा नत्थू खाँ इस गायकी के लिए प्रसिद्ध थे। तराने की गति मध्य लय से धीरे-2 बढ़ाई जाती है।

Scanned with CamScanner

DATE : / 20
PAGE No

कुछ गायकों के मतानुसार तरानों के शब्दों का अर्थ होता है। इन शब्दों के जरिये वो खुदा से प्रार्थना करते हैं। दाक्षिणात्य संगीत में इसे 'तिल्लाना' के नाम से जानते हैं।

(5) मेजर टोन :-> शुद्ध सात स्वरों के सप्तक को मेजर स्केल कहते हैं। पाश्चात्य संगीत का मेजर स्केल भारतीय बिलावल थाट के समान है। मेजर स्केल का निर्माण मेजर कार्ड्स से होता है।
जैसे :-> सा ग प म ध सा प नी रे आदि।

(6) माइनर स्केल (टोन) :-> जब किसी मेजर स्वरांतर को एक सेमी टोन को कम कर देते हैं। तो वह माइनर स्वरांतर कहलाता है। माइनर कॉर्ड्स के स्वरों को कम से स्वन पर तथा बीच के स्वर कोमल करने पर माइनर कॉर्ड्स हैं।
जैसे :-> सा ग प म ध सा प नी रे।
पाश्चात्य संगीत की माइनर स्केल टोन बिलावल थाट के समान है। माइनर स्केल में 5 टोन 2 सेमी टोन होते हैं।
माइनर टोन के तीन प्रकार हैं :-
(i) नेचुरल माइनर स्केल (ii) हारमोनियम माइनर स्केल
(iii) मेलोडिक माइनर स्केल

(7) परमेल प्रवेशक राग :-> परमेल का अर्थ है। दूसरा कोई मेल और प्रवेशक यानी प्रवेशक राग वे कहे जाते हैं जो किसी एक मेल या थाट से दूसरे मेल या थाट प्रवेश करते हैं। जैसे संध्याकाल में गाए जाने वाले सर्वप्रकाश रागों को गाकर जब गायक समयानुसार दूसरे किसी मेल के राग गाना चाहता है।
जैसे :-> भीमपलासी, धनाश्री गाकर जब कोई गायक मुल्तानी गाने लगता है तो इससे यह संकेत होता है कि अब गायक किसी दूसरे थाट या मेल में प्रवेश करने वाला है। इस प्रकार मुल्तानी या मेल प्रवेशक राग माना गया है।

Scanned with CamScanner

मार्गी और देशी संगीत में अंतर :—

मार्गी संगीत :→ मार्गी संगीत से तात्पर्य सामगान से माना गया है। जो आज लुप्त हो गया है। यह संगीत वेद प्रधान है। सामगान का प्रथम विकास ऋषि मुनियो द्वारा किया गया। संगीत केवल सुधारक मे वर्णित है कि मार्गी संगीत केवल वैदिक काल मे उपलब्ध था। इसका लोप हो गया मार्गी संगीत का प्रयोग धार्मिक समारोह पर धार्मिक विधि विधान के अंतर्गत होता है।

देशी संगीत :→ सर्वप्रथम देशी संगीत का वर्णन मतंगमुनि द्वारा रचित वृहद् मे उपलब्ध है। मतंगमुनी ने लिखा है, अबला बाल गोपाल तथा राजा अपनी-2 इच्छा और अपनी-2 बोली मे जो अनुराग सहित गाते है वही देशी संगीत है। देश-2 की रूचि के अनुसार हृदय को पसंद करने वाले गीत वादन एवं नृत्य को देशी संगीत कहते है।

दोनो मे अंतर :→ मार्गी जन संगीत की वह धारा है। जो संस्कृत जनो मे प्रभावित है। इसके विपरीत देशी संगीत लोक रूचि के अनुसार होता है। मार्गी संगीत मे शास्त्रीय बंधन होता है। किन्तु देशी संगीत मे बंधन नही होता है। मार्गी संगीत वैदिक और पौराणिक सामगान तथा भजगान का संगीत है। जबकि देशी संगीत विभिन्न समय विभिन्न स्थानो का संगीत है। मार्गी संगीत नियम से बंधा होता है। तथा कला प्रधान है। देशी संगीत भाव प्रधान होता है। मार्गी संगीत का अनुभव मनुष्य निजी स्वर पर करता है। जबकि देशी संगीत का आवागमन सभी करते है।

Scanned with CamScanner

PAGE No

गायकों के गुण दोष :—

संगीत रत्नाकर मे गायकों के गुण व दोषों के बारे मे चर्चा की गई है। पहले इन गायकों के गुणों के बारे मे वर्णन करेंगे।

गायकों के गुण :—

(1) सुघं शब्द :→ जिसकी आवाज मधुर व प्रिय हो।

(2) सुशरीरी :→ जिसकी वाणी मे उश्वास के बिना राग स्वरूप प्राप्त करने का गुण हो।

(3) राग रागंग कोविद :→ जो रागरांगो को जानने वाला हो।

(4) ग्राममोक्षाविक्षण :→ जो गुरु और न्यास के नियमों को जानने वाला हो।

(5) प्रबंधगान निष्णात :→ जो प्रबंध गान मे निपुण हो।

(6) जो आलाप करने की गूढ़ बातों को जानता हो।

(7) जिसका गला या कंठ अपने नियंत्रण में हो।

(8) जो ताल का ज्ञाता हो।

गायकों के दोष :→

1. जो दांत पीसकर गाता हो।
2. जो नीरस जोरसे गाए।
3. जो भयभीत होकर गाने वाला हो।
4. जो बिना आत्म-विश्वास के गाए।
5. जो कांपती हुई आवाज से गाए।
6. जो बिना स्वर के गाने वाला हो।
7. जो बिना ताल के गाए।
8. मुंह फाडकर गाने वाला।

Scanned with CamScanner